# एआइ से पशुओं की बीमारियों की होगी पहचान, रेडियोलाजी रिपोर्ट होगी तैयार

## उपलब्धि ● वेटरनरी विश्वविद्यालय ने शुरू की तैयारी, एआइ विशेषज्ञों से लेंगे सहयोग

अतुल शुक्ला ● नईदुनिया

**जबलपुरः** पशु चिकित्सा और अनुसंधान के क्षेत्र में अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) की एंट्री होने जा रही है। पशुओं में बीमारियों की त्वरित और सटीक पहचान से लेकर जटिल सर्जरी की तैयारी तथा रेडियोलाजी रिपोर्ट तैयार करने तक के कार्यों में एआइ की मदद ली जाएगी।

इसके लिए नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय ने देशभर के एआइ विशेषज्ञों, तकनीकी संस्थानों और पशु औषधि निर्माण से जुड़ी कंपनियों के साथ सहयोग की प्रक्रिया शुरू करने की तैयारी की है। विश्वविद्यालय में पहले चरण में पशुओं की सर्जरी और उनकी बीमारी तलाशने में एआइ की मदद ली जाएगी। इसके लिए सर्जिकल मशीन बनाने वाली कंपनियों के साथ समझौता होगा। वहीं बीमारियों की पहचान और उनके इलाज के लिए भी वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु विज्ञानी मदद लेंगे।

दरअसल हाल ही में उच्च शिक्षा विभाग ने शिक्षा और शोध से जुड़े कामों में एआइ की मदद लेने के निर्देश दिए हैं। इसको लेकर इंदौर में

एक बैठक भी हुई। इसके बाद से विवि ने सर्जरी और मेडिसिन विभाग में इसकी मदद लेने की तैयारी शुरू कर दी है।

**बीमारियों की पहचान में मददगार होगाः** वेटरनरी विश्वविद्यालय के डायरेक्टर रिसर्च डा. आर के शर्मा ने बताया कि पशुओं के एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड, सीटी स्कैन सहित अन्य डायग्नोस्टिक जांचों का विश्लेषण के लिए एआइ आधारित तकनीकों की मदद ली जानी है। इसके लिए रूपरेखा तैयार हो रही है। इसकी मदद से बीमारियों की पहचान पहले की तुलना में अधिक तेज और सटीक हो सकेगी। विशेष रूप से ऐसी बीमारियां, जिनके शुरुआती लक्षण सामान्य जांच में पकड़ में नहीं आते, उन्हें भी एआइ की सहायता से चिन्हित किया जा सकेगा। विश्वविद्यालय अपने अनुसंधान कार्यों को भी एआइ से जोड़ने की योजना पर काम कर रहा है। शोध परियोजनाओं से प्राप्त बड़े आंकड़ों के विश्लेषण, रोगों के पैटर्न की पहचान तथा नई उपचार पद्धतियों के विकास में एआइ उपयोगी साबित हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे अनुसंधान की गुणवत्ता और गति दोनों में सुधार होगा।

**उद्योग और संस्थानों से होगा सहयोगः** विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. एसएस तोमर ने बताया कि हाल ही में इंदौर में हुई बैठक में विवि में एआइ की मदद लेने पर जोर दिया गया। हमारा काम मुख्यतौर पर शोध आधारित है। इसलिए हमने मुख्यतौर पर सर्जरी और मेडिसिन विभाग में एआइ की मदद लेने पर जोर देंगे।

### एआइ से मिलेंगे ये लाभ

- बीमारियों की त्वरित और सटीक पहचान की जा सकेगी।
- एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड व सीटी स्कैन रिपोर्ट का विश्लेषण।
- सर्जरी से पहले जोखिम का आकलन।
- उपचार योजना तैयार करने में सहायता।
- शोध कार्यों में डेटा विश्लेषण की बेहतर सुविधा।
- पशु स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार संभव हो सकेगा।

एआइ आधारित तकनीकों के प्रभावी उपयोग के लिए विश्वविद्यालय पशु औषधि निर्माण कंपनियों, तकनीकी संस्थानों और अनुसंधान संगठनों के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) करेगा। इसके माध्यम से तकनीकी विशेषज्ञता, प्रशिक्षण और नवाचार को बढ़ावा मिलेगा। यह पहल पशु चिकित्सा सेवाओं को आधुनिक बनाने के साथ-साथ पशुपालकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने में भी महत्वपूर्ण साबित होगी।

**- प्रो .मनदीप शर्मा**
कुलगुरू, वेटरनरी विवि जबलपुर